सहारा मरुस्थल की गुम नदियां

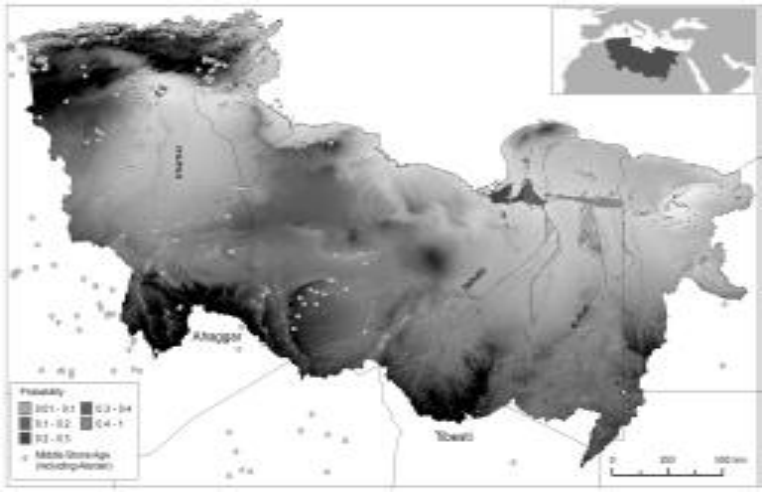

सहारा मरुस्थल के गर्भ में दबी प्राचीन नदियां एक समय पर इस रेगिस्तान को हरा-भरा रखती थीं और इन्हीं नदियों ने मनुष्य को अफ्रीका से बाहर का रास्ता दिखाया था।

एक जलवायु मॉडल की मदद से वैज्ञानिकों ने यह तस्वीर तैयार की है कि 1 लाख साल पहले यह जगह कैसी दिखती होगी। इस तस्वीर से पता चलता है कि संभवतः प्रारंभिक मनुष्य उप-सहारा अफ्रीका से पश्चिम की ओर गए और फिर वहां से विशाल उपजाऊ नदी तंत्र के सहारे भूमध्य सागर की ओर बढ़े।

काफी समय से कयास लगाए जाते रहे हैं कि उत्तरी अफ्रीका की जो नदियां आज सूख चुकी हैं, वे किसी समय कलकल बहती थीं और पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को सहारा देती थीं। इनसे मनुष्यों को भी भोजन मिलता था और वे बढ़ते-बढ़ते भूमध्य सागर से होते हुए यूरेशिया तक जा पहुंचे थे। अलबत्ता, यह अंदाज़ लगाना मुश्किल रहा है कि इन नदियों में कितना पानी होता था, ये कहां से कहां तक बहती थीं और रेगिस्तान में अंदर कहां तक पहुंची थीं।

हल विश्वविद्यालय के भूजल वैज्ञानिक टॉम कोल्टहार्ड ने प्राचीन समय का एक जलवायु मॉडल विकसित करके यह देखने की कोशिश की कि वहां कितनी बरसात होती होगी और यह पानी कितनी दूरी तक बहता होगा। ज़मीन में पानी के अवशोषण या वाष्पन वगैरह को ध्यान में रखने के बाद यह मॉडल दर्शाता है कि इतना पानी तो बहता था कि रेगिस्तान में हरित पट्टियां निर्मित हो सकें। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण नदी संभवतः इर्हारहार रही होगी। यह आजकल की अल्जीरिया-ट्यूनिशिया सीमा पर करीब 800 किलोमीटर बहती होगी।

मज़ेदार बात यह है कि इर्हारहार नदी तंत्र तीन नदी तंत्रों में सबसे पश्चिम में है और जहां तक हमारी जानकारी है मनुष्य अफ्रीका से बाहर पूर्वी तट से गए थे। इस सम्बंध में कोल्टहार्ड के साथी माइकेल रॉजर्सन का मत है कि संभवतः उस समय लोग पहले पश्चिम की ओर बढ़े थे और फिर समुद्री संसाधनों का उपयोग करते हुए समुद्र किनारे पूर्व की ओर बढ़े होंगे। उनका कहना है कि अन्य नदी तंत्रों की राह आगे बढ़ने वाले लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में फंस गए होंगे। ये दो नदी तंत्र आपको ले जाकर लिबिया के मध्य में छोड़ देते हैं, जो उस समय काफी बंजर रहा होगा।

जहां तक पुरातात्विक प्रमाणों का सवाल है, तो ये हमें पश्चिम की ओर ज़्यादा मिलते हैं। इससे भी लगता है कि मनुष्यों ने इर्हारहार नदी का रास्ता पकड़ा था। यहां पत्थर के औज़ार भी बहुतायत में मिलते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***